अभिनव शिक्षण तकनीक

प्रत्येक छात्र को शिक्षित करने के उद्देश्य और शिक्षा के प्रति आकर्षण उत्पन्न करने के लिये सरकार ने अनेक सुविधाएं उपलब्ध करायी हैं। सरकारी विद्यालयों में पूर्ण रूप से निःशुल्क शिक्षा के साथ पाठ्य पुस्तकें, मध्यान्ह भोजन, छात्रवृत्ति, शिक्षण अधिगम सामग्री उपलब्ध कराने के लिये सरकार ने अपने संपूर्ण प्रयास किये हैं। इसके परिणाम भी सामने आये हैं और विद्यालयों में नामांकन संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है, लेकिन नामांकित छात्रों का विद्यालय न आना या सिर्फ मध्यान्ह भोजन प्राप्त करने के लिये आना अथवा पठन-पाठन में रुचि न लेना एक गंभीर समस्या बनी हुई है। इस समस्या से मुक्ति पाने और छात्रों में विद्यालय व शिक्षा के प्रति रुचि जागृत करने के लिये आवश्यक है कि शिक्षा क्षेत्र में अभिनव प्रयोग किये जायें और शिक्षा पद्धति को रोचक बनाया जाये। अब समय आ गया है जब संख्यात्मक को गुणात्मक शिक्षा में परिवर्तित किया जाये। प्रदेश के अनेक शिक्षक इस दिशा में अपने सद्प्रयासों से अपने-अपने विद्यालयों में प्रयासरत हैं लेकिन ZIIEI सीमित विद्यालयों में चल रहे अभिनव प्रयोगों को दूरस्थ शिक्षा केंद्रों तक संगठित एवं सामुदायिक प्रयासों में सतत् प्रयत्नशील है। ऐसा ही एक संवर्धित नवाचार यहां प्रस्तुत है, जो छात्रों को रोचक भी लगेगा और उनमें ज्ञान का संचार भी करेगा।

नवाचारकों के नाम

1. **प्रतिमा**, प्रा.वि. लहरपतेर, कौधियारा, इलाहाबाद
2. **सुशील कुमार**, प्रा.वि. गुलरिया हरख, बाराबंकी
3. **अनिल कुमार**, प्रा.वि. परापांतर पनवाड़ी, महोबा
4. **ज्योति रावत**, प्रा.वि. गुलरिहा हरख, बाराबंकी

नवाचार के क्षेत्र

1. सीखने के परिणामों में सुधार
2. स्वयं सीखने का वातावरण
3. छात्रों के नामांकन की दर में सुधार
4. छात्रों की विद्यालय छोड़ने और अनुपस्थिति की दर में कमी
5. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिरुचि के स्तर में सुधार

किन विद्यालयों में उपयुक्त है : प्रत्येक विद्यालय में लागू किया जा सकता है।

नवाचार का सार

छात्रों की अरुचि और पाठ्यक्रम समझने की अक्षमता को दूर करने के लिये पाठ्यक्रम में नवीन दृष्टिकोण को सम्मिलित करने से इस समस्या का निवारण किया जा सकता है। विभिन्न क्रियाकलापों से छात्रों में पाठ्यक्रम के प्रति रुचि जगायी जा सकती है। प्रतिदिन नये क्रियाकलाप से छात्र शिक्षा के प्रति नीरस नहीं होगें अपितु स्वयं सीखने और सिखाने की गतिविधियों में भी सम्मिलित होगें।

क्रियान्वयन

कक्षा में प्रभावी शिक्षण व अनुशासन बनाये रखने के लिये हम कक्षा शिक्षण को विभिन्न चरणों में बांट सकते हैं।

थीम आधारित उपस्थिति

छात्रों की प्रतिदिन उपस्थिति थीम आधारित हो सकती है, जैसे– यदि आज की थीम 'फूल' है तो छात्र 'जी सर' के स्थान पर फूलों के नाम बोलेंगे। थीम के उदाहरण– फल, देश, प्रदेश, महीने, रासायनिक तत्व, ऐतिहासिक भवन, अविष्कारों आदि के नाम।

मेडिटेशन

छात्रों का ध्यान केन्द्रित कराने के लिये मेडिटेशन एक उपयोगी योगिक क्रिया है। शिक्षण शुरू करने से पहले छात्रों को मेडिटेशन (योग-साधना) करवाया जाता है। उन्हें आंख बंद करके कुछ देर के लिये बैठा दिया जाता है और लम्बी सांस लेने को कहते हैं, अंत में उन्हें वॉर्म-अप करवाया जाता है। जैसे– अपनी जगह पर कूदना, जोर-जोर से हंसना, तालियां बजाना, आंखे बंद करके अपने आप को महसूस करना, एक दूसरे से हाथ मिलाना, कदम ताल इत्यादि।

लाभ : इससे उनकी थकान कम होती है और शिक्षण पर ध्यान केन्द्रित करने में सुविधा होती है।

बैठने की व्यवस्था

कक्षा में छात्रों को विषय के शीर्षक के अनुसार व्यवस्थित कर बैठने को कहा जाता है। जैसे–गणित में आरोही व अवरोही पढ़ाना है, तो कक्षा को दो भागों में बांट कर पंक्ति कद के अनुसार घटते क्रम में। गणित के अगर त्रिभुज, वृत्त अथवा आयत के आकार पढ़ाने हैं, तो छात्रों को इन्हीं आकारों में बैठाया जाता है। इस प्रकार विलोम शब्द पढ़ाते हुए छात्रों को विपरीत दिशा में मुहं करके बैठा दिया जाता है।

लाभ : ऐसा करने से कक्षा में अधिगम आसान हो जाता है और नीरसता समाप्त होती है।

कॉन्सेप्ट् एक्सप्लेनेशन

कक्षा शिक्षण विषय पर आधारित गतिविधि के अनुसार होना चाहिए, जिससे सभी छात्र कक्षा में सक्रिय रहें। जैसे-

विलोम शब्द : छात्रों को समानांतर पंक्ति में खड़ा करके अध्यापक कहेगा कि जब मैं बैठने को बोलूं तो खड़े होना है यदि दायां हाथ उठाने को कहें तो बायां हाथ उठाना है, जो छात्र प्रत्येक गतिविधि में ऐसा नहीं कर पायेगा वो खेल से बाहर हो जायेगा। निबंध पढ़ाने के लिये कक्षा को समूह में बांट देते हैं, प्रत्येक समूह को एक शीर्षक देते हैं। जैसे– 'हमारे राष्ट्रीय त्यौहार', अध्यापक प्रत्येक समूह में जाकर छात्रों की सहायता करके सबके सामने प्रस्तुतिकरण कराते हैं और निबंध पूरा हो जाता है।

लेखन कार्य

शिक्षक छात्रों से जैसी कॉपी बनाने की अपेक्षा करते हैं, वैसी कॉपी बनाकर, आवश्यकतानुसार चित्रों व रंगो से सजाकर वह कॉपी छात्रों को देकर वैसी ही कॉपी बनाने के लिये प्रेरित करें।

लाभ : शिक्षक द्वारा बनायी गयी कॉपियों से यह लाभ होता है कि छात्र सुन्दर ढंग से अपनी कॉपियां बनाकर लिखने लगते हैं जिससे कॉपियां सुन्दर दिखती हैं, साथ ही छात्रों के लेखन कौशल का भी विकास होता है।

छात्रों द्वारा बनायी गयी अच्छी कॉपियों को शिक्षक सत्र के बाद अपने पास रखें ताकि आगामी सत्र में उनके पास एक से अधिक कॉपियां हो जायेंगी, जो आगे आने वाले सत्रों में कार्य करेंगी।

गलत चार्ट शिक्षण विधि

छात्रों को शिक्षण के पश्चात चार्ट द्वारा पुनः अध्ययन कराया जाता है, परन्तु यदि चार्ट पर गलत चित्र या जानकारी लिखी जाये और छात्रों को उसे सही करने को बोला जाये तो छात्रों में सही गलत का ज्ञान होता है और ज्ञानेन्द्रियों का विकास होता है।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

इस विधि द्वारा छात्रों को विषय की जानकारी सही तरीके से देकर बीच-बीच में या पाठ के अन्त में बहुविकल्पीय प्रश्नों द्वारा

छात्रों को विकल्प में से एक सही उत्तर देकर बाकी विषय से हटकर विकल्प दिये जाते हैं। जैसे–

सीता जी का हरण किसने किया?

क) पोकेमॉन

ख) डोरेमॉन

ग) रावण

घ) मिक्की मॉउस

लाभ : विकल्प इतने मजेदार होते हैं कि छात्र तुरंत उत्साहित होकर सही उत्तर देते हैं। इससे छात्रों को कक्षा बोझिल महसूस नहीं होती तथा उनमें सही उत्तर देने की होड़ मच जाती है।

आज का शिक्षक

इस चरण में शिक्षक छात्रों के साथ बैठते हैं। किसी एक छात्र को शिक्षक बना दिया जाता है, वह अपने मनपसंद विषय को अध्यापक की शैली में पढ़ाता है।

लाभ : इससे छात्रों में नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास एवं विषय के प्रति लगाव बढ़ जाता है। शिक्षक की अनुपस्थिति में भी कक्षाएं सुचारु रुप से चलती हैं। सभी छात्रों में शिक्षक के प्रति झिझक दूर होती है तथा शिक्षक भी छात्र में अपना प्रतिबिम्ब देखकर अपनी कमियों को दूर करते हैं।

अभ्यास (Pair and Share)

टॉपिक के अन्त में दो-दो छात्रों के ग्रुप बनाये जायें तथा दोनों छात्र टॉपिक को अपनी समझ अनुसार एक दूसरे को बतायें।

लाभ : छात्रों का तुरंत ही पुनः अध्ययन (Revision) हो जाता है। यदि कुछ समझ में नही आया हो तो वह स्पष्ट हो जाता है। शंका समाधान होने के साथ भ्रम की स्थिति समाप्त हो जाती है।

गृह कार्य

गृह कार्य को घर के परिवेश के अनुसार दिया जाता है। जैसे– छात्रों से अपने परिवार के सदस्यों के नाम और उनकी आयु लिखकर जोड़ना, घटाना आदि। यदि क्षेत्रफल सम्बंधी गृह कार्य है तो घर व आसपास की आकृतियों का परिमाप व क्षेत्रफल लिखकर लायें। इसी प्रकार रंगों की जानकारी के लिये परिवार के सदस्यों द्वारा पहने गये वस्त्रों के रंग लिखकर लायें।

लाभ : छात्र होमवर्क मन लगाकर करते हैं। ज्ञान को वास्तविक जीवन से जोड़कर उनका ज्ञान स्थायी हो जाता है।

नामकरण पद्धति

नामकरण पद्धति से कक्षा शिक्षण के लिये पहले छात्रों को एक ग्रुप में बैठाया जाता है और पढ़ायी जाने वाली विषय वस्तु

पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। छात्रों के नाम को परिवर्तित करके विषय आधारित नाम दे दिये जाते हैं, जैसे– भारत के प्रमुख राज्य व जनजीवन।

भारत के सभी राज्यों के नाम छात्रों को याद करवाने के उद्देश्य से छात्रों की जेब पर राज्यों के नाम की पर्ची लगा दी जाती है। छात्रों को पर्ची में लिखे राज्य के नाम से सम्बोधित किया जाता है। धीरे-धीरे छात्र एक-दूसरे को उसी नाम से पुकारते हैं और प्रदेशों के नाम से परिचित हो जाते हैं। इसके पश्चात उनकी पर्ची पर प्रदेश के नाम के आगे राजधानी लिख दी जाती है। सभी छात्र अपनी व एक-दूसरे की राजधानी के नाम से परिचित हो जाते हैं। इसके पश्चात् कक्षा में पाठ को विस्तृत रूप से पढ़ाया जाता है। प्रत्येक छात्र को उसके राज्य से जुड़ी जानकारी उपलब्ध करायी जाती है। छात्र पहले स्वयं सीखते हैं, फिर एक-दूसरे का परिचय देते हैं। इसे अन्य विषयों जैसे– रासायनिक तत्व व उनके प्रतीकों के नाम, यन्त्र व उनके आविष्कारक, विश्व के देश व उनकी राजधानी आदि छात्रों को नामकरण के माध्यम से सिखाया जा सकता है।

लाभ : इस नवाचार के माध्यम से कक्षा के कमजोर छात्रों को अत्यधिक मदद मिलती है। छात्र क्रियाशील होकर खेल-खेल में सीखते हैं। यह गतिविधि कहीं भी करवायी जा सकती है। शिक्षक को एक बार प्रयास करना पड़ता है। छात्र स्वयं दो-चार दिन में विषय वस्तु को याद कर लेते हैं।

नवाचार के लाभप्रद क्षेत्र : इन क्रियाकलापों से छात्रों में शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न हुई और उनकी याद रखने की क्षमता में भी सुधार आया। क्रियाकलापों को रुचिकर बनाने से छात्रों की उपस्थिति दर में भी सुधार आया। इससे पुनः अध्ययन भी सरल हो जाता है, छात्र पाठ को याद रखते हैं तथा अगले दिन विद्यालय में आने के लिये प्रेरित भी होते हैं। ■